





1004



1003





1002



जो न कभी हर्षित होता है, न खेप करता है,
न शोक करता है, न कामना करता है
तथा जो शुभ और कष्टों सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है-
वह भक्तियुक्त पुरुष मुझको प्रिय है ।